महर्षि-प्रभा

ॐ

मासिक ई-पत्रिका

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

अंक-३

माह –अक्तूबर और नवम्बर

वर्ष २०२१

विक्रमी संवत् २०७८

ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

संरक्षक-

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)
श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)
श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक-

प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)

प्रो. राजकुमार मित्तल
(कुलपति)

प्रधान सम्पादक-

प्रो. यशवीर सिंह
(कुलसचिव)

सम्पादक-

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय

सहसम्पादक-

डॉ. नरेश शर्मा
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादक

रजनी
शीतल

संस्कृत भाषा और रोजगार

कोई भी भाषा रोजगार नहीं देती अपितु निहित ज्ञान ही रोजगार देता है।

परम्परागत रोजगार की दृष्टि से कर्मकाण्ड, वास्तु अथवा ज्योतिष में तो स्वतंत्र रोजगार हैं ही। साथ ही संस्कृत के परम्परागत विषयों में यथा वेद, व्याकरण, दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, योग, वास्तु, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास आदि विषयों में शैक्षणिक दृष्टि से रोजगार की संभावनाएं स्पष्ट हैं। परन्तु इस वर्ष से "हिंदू अध्ययन" के रूप में नया विषय कई विश्वविद्यालयों ने आरम्भ किया है जो कि भविष्य में प्रतियोगी परीक्षाओं के संदर्भ में निसंदेह महत्वपूर्ण होगा।

योग के क्षेत्र में योग प्रशिक्षक के रूप में वैश्विक रोजगार की स्थिति है तथा सेना में सेवानिवृत्ति के पश्चात यदि योग सम्बन्धी उपाधि हो तो योग प्रशिक्षक के रूप में उन्हें कमीशन प्राप्त होता है। अतः योग रोजगार का विशिष्ट माध्यम है। सऊदी अरब में योग अनिवार्य विषय के रूप में विद्यालयों में पढ़ाया जाने लगा है।

कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में संस्कृत की उपयोगिता स्वतः सिद्ध है। नासा द्वारा 2025 तक जो छठी पीढी का सुपरकम्पयूटर बनाया जा रहा है वह अधिकतम सीमा तक उपयोग के लिए होगा, जो कि संस्कृत को मुख्य भाषा मानते हुए निर्मित होगा। इसके बाद जो भाषा क्रांन्ति होगी उसमें संस्कृत सबसे ऊपर होगी। संस्कृत के साथ कम्प्यूटर जानने वालों के लिए असीमित रोजगार सृजन होगा। इसके अतिरिक्त जूनागढ़ एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय संस्कृत के साथ कम्प्यूटेशनल संस्कृत के पाठ्यक्रम संचालित करता है। इस विषय से पी.एच.डी. प्राप्त कर कई लोग बहुत अच्छे पैकेज पर सी.डेक. कम्पनी से रोजगार प्राप्त कर चुके हैं।

विज्ञान के क्षेत्र एवं उपक्षेत्रों में शोध के माध्यम से रोजगार की असीमित संभावनाएं हैं क्योंकि नई शिक्षा नीति के आने के पश्चात विज्ञान के क्षेत्र में भी भारतीय परम्परागत विज्ञान के आधार पर ही आधुनिक विज्ञान को इस कटौती पर रखा जाएगा। अतः अगले वर्ष से भौतिकी, रसायन एवं विज्ञान की अन्य शाखाओं में भी संस्कृत की उपयोगिता स्वतः सिद्ध होगी तथा नए रोजगार की सम्भावनाएँ उपस्थित होंगी।

- कृषि विज्ञान के क्षेत्र में भी औषधीय कृषि के परामर्श केन्द्र खोले जा सकते हैं जहां संस्कृत आधारित ज्ञान का उपयोग होगा।
- चिकित्सा क्षेत्र में आयुर्वेद महनीयता सिद्ध है। जर्मनी और रूस में इस विषय पर सर्वाधिक शोध किए जा रहे हैं। आयुर्वेद सम्बन्धी बहुत से ग्रन्थ अभी प्रकाश में ही नहीं आए हैं।
- अमेरिका हिन्दू विश्वविद्यालय ने "मानव के तंत्रिका तन्त्र पर उच्चारण का प्रभाव" इस विषय पर गहन शोध किया है तथा अमेरिका में बहुत से स्पीच थैरेपी सेन्टर खोले गए हैं जहां संस्कृत के मन्त्रोच्चारण के आधार पर इलाज किया जाता है।
- अन्तरिक्ष विज्ञान के संदर्भ में सिद्धान्त ज्योतिष के ग्रन्थों का महत्त्व है तथा वेदों में भी इस विज्ञान के अन्तर्गत पर्याप्त चर्चा की गई है।
- सैन्य विज्ञान के सन्दर्भ में धर्मशास्त्र के ग्रन्थ, यथा भगवन्त भास्कर, वीरमिभोदय आदि कई ग्रन्थ हैं जिनमें सैन्य विज्ञान की पर्याप्त चर्चा है। अर्थशास्त्र एवं नीतिशास्त्र तथा धर्मशास्त्र के ग्रन्थ राजनीतिक चिंतन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

कोई भी विदेशी भाषा सीखकर उस देश में रोजगार की स्थिति स्पष्ट है। हर देश में संस्कृत सम्बन्धी रोजगार हैं किन्तु उस देश की मुख्य भाषा जानना साथ में आवश्यक है।
संस्कृत भाषा का ज्ञान कर एंकर, अनुवादक, संस्कृत प्रशिक्षक आदि के रूप में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है तथा प्रतियोगी सिविल सेवा परीक्षा में संस्कृत के विषय के साथ सफलता प्राप्त की जा सकती है।

कला के क्षेत्र में भी नाट्य के आधार पर रोजगार उपलब्ध हैं। भारत में लगभग 300 से अधिक संस्कृत नाट्य दल हैं और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा एवं राज्य की इस प्रकार की संस्थाओं में नाट्यशास्त्र का ही प्रयोग सर्वाधिक है जिसे अन्य भाषाओं के माध्यम से बताया है।यहां भी संस्कृतज्ञों की आवश्यकता है। भारत में ही डॉ. संजय द्विवेदी द्वारा नए इनोवेशन के रूप में ध्रुवा संस्कृत बैण्ड बनाया है जो कि भारत में विख्यात है, जिनको देख कई छोटे-छोटे संस्कृत बैण्ड बनाए गए हैं।

पाण्डुलिपि के क्षेत्र में असीमित रोजगार की सम्भावनाएँ हैं। भारत में करोड़ों की संख्या में अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ हैं जिनके प्रकाशन के लिए लाखों पाण्डुलिपि विज्ञानियों की आवश्यकता है जो आज उपलब्ध नहीं हैं। इस क्षेत्र पर दृष्टि डालने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

संस्कृत के प्राध्यापकों के पास विभिन्न परियोजनाओं को स्थापित करने की क्षमताएं हैं। प्राध्यापकों में इस दृष्टि की आवश्यकता है। एक एक प्राध्यापक सैकड़ों युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में समर्थ है।

प्रो. राजकुमार मित्तल
कुलपति

सम्पादकीयम्

ऋषिमुनीनां धरा भारतम् अशेष विश्वेऽस्मिन् मानवीयमूल्यानां स्थापनं कृत्वा तेषां संरक्षणे च महती भूमिकां निवोढयति। महर्षिवाल्मीकि विरचितं रामायणं मानवीयमूल्यानां विश्वकोशो वर्तते। महर्षिवाल्मीकिविरचितस्य रामायणस्य संदर्भे अशेषभारतवर्षे यादृशी श्रद्धा दरीदृश्यते तादृशी अन्यत्र कुत्रापि न दृश्यते। रामायणं लौकिकसंस्कृतसाहित्यस्य आदिमो ग्रन्थो वर्तते। रामायणस्य विषये स्वयं ब्रह्मणा उक्तं वर्तते यत्-

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरिताश्च महीतले।
तावद् रामायणी कथा लोकेऽस्मिन् प्रचरिष्यति॥

भारतीयलोकजीवने रामायणस्य जीवनदर्शनं स्पष्टतः परिदृश्यते। अस्माकं सामाजिकपरम्परानुसारं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' इत्यस्य साक्षाद्दर्शनम् अधुनापि सर्वत्र दरीदृश्यते। अस्माकं पारिवारिकाः, सामाजिकाश्चद सर्वे व्यवहाराः रामायणे विलिखताः दर्शनानुसारमेव परिपाल्यन्ते। परिवारव्यवस्था कीदृशी स्यात् ? राजव्यवस्था, सामाजिकव्यवस्था, अर्थतंत्रं, दण्डनीतिः, राष्ट्रनीतिः, शत्रुनीतिः तथा च नैतिकव्यवहार आदयः कथं स्युः ? भारतीयसंस्कृतेः साक्षाद्दर्शनं रामायणमहाकाव्ये भवति।

महर्षिवाल्मीकिविरचितं रामायणं साहित्यस्य उपजीव्यकाव्यमस्ति। महर्षिवाल्मीकिः करुणानिधिः आसीत्। सः एकदा स्नातुं गच्छन् क्रौञ्चमिथुनादेकं वधं दृष्ट्वा द्रवीभूत्वा तस्य मुखान्निसृतः श्लोकः –

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमाः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

एकः श्लोकः एव लौकिकसंस्कृत साहित्यस्य आदिमश्लोकरूपे स्थापितः। लौकिकछन्दसः अद्भुतः श्लोकः आदिकाव्यरामायणस्य रचनायाः आधारोऽभवत्। अनेनैव भगवतः श्रीरामस्य जीवनचरितं लेखनस्य प्रेरणा प्रदत्ता। श्रीरामस्य जीवनचरितमाध्यमेन वाल्मीकिना भारतीयजीवनमूल्यानां स्थापना कृता।

रामायणे स्थापितानि जीवनमूल्यानि न केवलं भारतीयानाम् अपितु प्राणिमात्रस्य कल्याणाय सन्ति। एतानि जीवनमूल्यानि सार्वकालिकानि सार्वभौमिकानि च सन्ति। एतानि शाश्वतजीवनमूल्यानि एव भारतीय संस्कृतेः आधाराः सन्ति।

सम्पादक

व्याख्यानमाला

दिनांक 20-09-2021 से 28-09-2021

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल में व्याख्यानमाला का शुभारंभ आनलाईन माध्यम से किया गया जो निरन्तर मासान्त तक चलेगा।

शिक्षक को सदैव छात्र बनकर सीखते रहना चाहिए –कुलपति

प्रथम दिवस के व्याख्यान का शुभारंभ करते हुए अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल ने कहा कि संस्कृत से ही भारतीय संस्कृति को भली भांति समझा जा सकता है। अर्थ कर्म को धर्म से जोड़ कर किस प्रकार मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है यह हमें संस्कृत ही सिखाती है।

भारतीय संस्कृति की रक्षा संस्कृत से ही संभव- डॉ कृष्ण चन्द्र पाण्डेय

मुख्य वक्ता के रूप में साहित्य विभागीय आचार्य डॉ. कृष्ण चंद्र पांडेय ने **"भारतस्य आत्मा संस्कृतम्"** इस विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि संस्कृत केवल भारत की भाषा मात्र नहीं है अपितु संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान का केंद्र है। संस्कृत को जाने बिना हम भारत को पूर्णतया नहीं जान सकते। इस समय अगर हम देखें तो संस्कृत के प्रति भारत में इतनी जिज्ञासा नहीं है जितनी अन्य देशों में है। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. शर्मिला एवं संचालन डॉ. नरेश शर्मा द्वारा किया गया तथा अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. यशवीर सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिकारियों कर्मचारियों एवं छात्रों सहित अन्य छात्रों ने भी बढ़-चढ़कर भाग ग्रहण किया।

शिव के अंश हैं वास्तु पुरुष – डॉ. नवीन

द्वितीय दिवस के कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल जी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि शिक्षक को सदैव छात्र बनकर सीखते रहना चाहिए। ज्ञान को बढ़ाने के लिए अपने मस्तिष्क को सदा खुला रखते हुए समाज के प्रति संवेदनशील भी रहना चाहिए। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. नवीन शर्मा ने **"वास्तु शास्त्रीय पद्धति एवं रोजगार"** के विषय को लेकर कहा कि वास्तु शास्त्र, ज्योतिष साहित्य के अंतर्गत आता है। अंत में विश्वविद्यालय के साहित्य विभागीय सहाचार्य डॉ. जगत नारायण कौशिक ने सभी का धन्यवाद तथा आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. शर्मिला द्वारा तथा संचालन डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र द्वारा किया गया।

दशमलव प्रणाली का आधार है संस्कृत – प्रो. विनय गोपाल त्रिपाठी

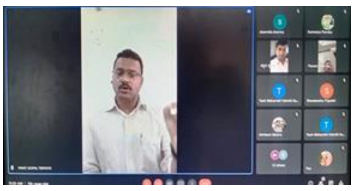

तृतीय दिवस पर कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल जी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि संस्कृत न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में प्रतिष्ठापित हो रही है। संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान को जानने के लिए विदेशी लोग शोध कर रहे हैं। मुख्य वक्ता के रूप में दर्शन विभाग के सहायकाचार्य डॉ. विनय गोपाल त्रिपाठी ने कहा कि जब विलियम जोन्स भारत में सुप्रीम कोर्ट में न्यायधीश के रूप में कार्य कर रहे थे तो उनके समक्ष यह विषय आया कि ग्रामीण गांवों में ही अपने विवादों का निपटारा मनु स्मृति आदि धर्म ग्रन्थों के आधार पर कर लेतें है इसलिए वे न्यायालयों में नहीं जाते।

वेद में निहित है विज्ञान – डॉ. मदनमोहन तिवारी

चतुर्थ दिवस की व्याख्यनामाला में मुख्यवक्ता के रुप में विश्वविद्यालय के वेदाचार्य डॉ. मदनमोहन तिवारी ने **"वैदिक विज्ञान का संक्षिप्त सन्दर्भ"** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने वेद शब्द की उत्पत्ति की विस्तृत जानकारी देते हुए ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के प्रथम मन्त्र की वैज्ञानिक दृष्टि प्रस्तुत की।

बिंग बैंग थ्यूरी से भी सटीक गणना प्राप्त होती सूर्यसिद्धान्त के द्वारा हैं – डॉ. नरेश शर्मा

पंचम दिवस पर विश्वविद्यालय के ज्योतिषाचार्य डॉ. नरेश शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में **"प्रत्यक्ष एवं वैज्ञानिक है ज्यौतिषशास्त्र"** इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया। डॉ शर्मा ने ब्रह्मा जी द्वारा आकाश में प्रतिष्ठित घड़ी को प्रत्यक्ष रूप से दिखाया।उन्होंने सूर्यसिद्धान्त नामक ग्रन्थ के गणितीय सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए बताया कि सृष्टि को उत्पन्न हुए 7,14,40,41,67,644 (सात खरब चौदह अरब चालीस करोड़ इकतालीस लाख सड़सठ हजार छ सौ चवालीस दिन) आजतक बीत चुके हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शीतांशु त्रिपाठी द्वारा किया गया एवं संयोजिका डॉ. शर्मिला जी रही।

योग युक्ति से मुक्ति - गिरिराज

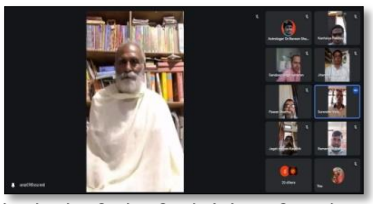

छठे दिवस पर विश्वविद्यालय के योगीराज आचार्य गिरिराज शर्मा ने **"दैनिक जीवन में योग का महत्व"** विषय को ॐकार के उच्चारण से प्रारम्भ करते हुए अपने व्याख्यान में कहा कि व्यक्ति में पित्त, वात एवं कफ की प्रकृति होती है। योग में युक्ति से मुक्ति होती है। सात्विक भोजन से ज्ञानेन्द्रियां सबल, सफल, संयमित हो मनोबल बढ़ता है। अंत में डॉ. सुरेन्द्र पाल वत्स ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नवीन शर्मा ने किया एवं संयोजिका डॉ. शर्मिला रही।

संस्कृत में अपार रोजगार की सम्भावना- डॉ शीतांशु त्रिपाठी

सप्तम दिवस पर माननीय कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि कोई भी भाषा रोजगार नहीं दे सकती अपितु उसमें निहित ज्ञान ही रोजगार देता है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह ने कहा कि संस्कृत हमारे ब्रह्मरंध्र में समाहित है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. शीतांशु त्रिपाठी ने कहा कि इस सत्र से हिंदू अध्ययन नामक पाठ्यक्रम संस्कृत विश्वविद्यालय के साथ अन्य 35 विश्वविद्यालयों में प्रारंभ हो रहा है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनय गोपाल त्रिपाठी द्वारा किया गया एवं संयोजिका डॉ. शर्मिला रही।

व्यक्ति को सर्वदा अग्निहोत्र होना चाहिए – डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

अष्टम दिवस पर कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि यह व्याख्यानमाला सभी के लिए ज्ञान-वर्धक करने में बहुत सहायक सिद्ध हो रही है। मुख्य वक्ता विश्वविद्यालय के वेद विभागीय सहायक आचार्य डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र ने **"वेदों में सन्निहित ज्ञान-विज्ञान की आधुनिक समय में उपयोगिता"** विषय पर व्याख्यान में कहा कि सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध समस्त विषय वेदों में प्रतिपादित हैं। अंत में डॉ. जगतनाराण कौशिक ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजिका एवं संचालिका डॉ. शर्मिला रही।

अखण्डता की सीख देती है संस्कृत- डॉ. शशिकान्त तिवारी

नवम दिवस व्याख्यानमाला का विषय **"संस्कृत क्यों पढ़े, कैसे पढ़े, क्या पढ़े"** रहा। कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल महोदय व निवेदक कुलसचिव प्रो.यशवीर सिंह महोदय उपस्थित रहे। व्याख्यानमाला में मुख्यवक्ता के रूप में उपस्थित दर्शन विभाग के प्रोफेसर डॉ. शशिकान्त तिवारी ने संस्कृत की विशेषता को बताते हुए कहा कि **"संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है संस्कृत भाषा में इतनी क्षमता है कि भारत ही नहीं अपितु विश्व की सभी भाषाओं का प्रतिनिधित्व कर सकती है"**। विश्वविद्यालय के साहित्यविभाग के आचार्य डॉ. जगतनारायण कौशिक ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के वेदविभाग के आचार्य डॉ. मदनमोहन तिवारी ने किया।

वाल्मीकि का राष्ट्र प्रेम अद्वितीय एवं अनुपम है – श्री दिनेश कामत

विश्वविद्यालय में मनाया गया वाल्मीकि जयंती समारोह

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा महर्षि वाल्मीकि जयंती के शुभ अवसर पर समारोह का आयोजन विश्वविद्यालय के प्रांगण में किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन करके किया । जिसमें डॉ. रामानंद और डॉ. नवीन शर्मा ने वैदिक मङ्गलाचरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में संस्कृतभारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री माननीय श्री दिनेश कामत जी, मुख्यवक्ता के रूप में प्रख्यात समाजसेवी एवं विचारक श्री शान्त प्रकाश जाटव एवं अध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल जी उपस्थित रहे। अतिथियों का स्वागत श्रीफल, अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह से किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय जी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों का परिचय करवाया । इसके उपरान्त कुलपति के विशेष कार्यकारी अधिकारी डा.जगतनारायण ने विविध दृष्टांतों के माध्यम से महर्षि वाल्मीकि जी का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्यवक्ता श्री शान्त प्रकाश जाटव जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु पुरोहित की अहम भूमिका रही है। उन्होंने सामाजिक समरसता और भारतीय जीवन मूल्यों के संरक्षण पर विशेष बल दिया।

संस्कृतभारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री तथा कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्री दिनेश कामत जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत भाषा में रामायण की रचना की । विश्व के विविध देशों में रामायण और श्रीराम का प्रभाव है । मुस्लिम देश इंडोनेशिया का राष्ट्रीय नाटक रामायण है।

मुस्लिम देश सऊदी अरब के विद्यालयों में रामायण और महाभारत पढ़ाने पर बल दिया जा रहा है। लंदन में एक सेंट जोसफ स्कूल में संस्कृत को अनिवार्य किया गया है। उनका कहना है कि संस्कृत पढ़ने से गणित, विज्ञान और सभी यूरोपियन भाषाओं को सरलता से समझा जा सकता है। यदि संस्कृत आ गई तो सभी भाषाओं को शीघ्रता से समझा जा सकता है। हरियाणा के कैथल जिले में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। हम सभी का दायित्व है कि हमें समाज के साथ मिलकर विश्वविद्यालय का विकास एवं संस्कृत का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल जी ने कहा कि हमें रामायण से एवं राम के चरित्र से सीखना चाहिए। युवाओं में सीखने अपार शक्ति होती है और उस शक्ति के बल पर वे कोई भी कार्य कर सकता है।

रामायण में प्रबन्धन पग-पग पर देखने को मिलता है। राम का त्याग, भरत का भातृप्रेम, सीता का स्त्रीत्व गुण तथा हनुमान का सेवक धर्म हमारे लिए उदाहरण है। जब तक इन आदर्शों को जीवन में हम नहीं उतारेंगे हमारा जीवन सफल नहीं होगा। हम सर्वदा समस्या की बात करते हैं समाधान की नहीं, जबकि सभी समास्याओं का समाधान हमारे पास होता है।

कार्यक्रम के अन्त में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो यशवीर सिंह जी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में मंच संचालन दर्शन विभाग के आचार्य डॉ. शशिकांत तिवारी ने किया। शान्ति मंत्र से कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय सामाजिक संगठनों, संस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा संस्कृतसेवियों व विश्वविद्यालय के समस्त छात्रवृंद तथा कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

दीपावली पर्व हमारे भारतीय संस्कृति परम्परा का मूल पर्व है – कुलपति प्रों राजकुमार मित्तल

संस्कृत विश्वविद्यालय में मनाया दीपावली मिलन कार्यक्रम

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा में गुरुवार 28 अक्तूबर को माननीय कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल एवं कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह जी के नेतृत्व में दीपावली मिलन समारोह का भव्य आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया । जिसमें विश्वविद्यालय के आचार्यों डॉ. रामानन्द मिश्र, डॉ. मदन मोहन तिवारी, डॉ. नवीन शर्मा द्वारा यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न करवाया गया।

यज्ञ उपरान्त माननीय कुलपति ने समस्त विश्वविद्यालय परिवार को संबोधित करते हुए कहा कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जीवन जीना चाहिए । दीपावली पर्व हमारे भारतीय संस्कृति परम्परा का मूल पर्व है। यह असत्य पर सत्य का, अधर्म पर धर्म का, अत्याचार पर सदाचार के विजय का पर्व है। सबसे पहले यह पर्व जब भगवान राम ने रावण पर विजय प्राप्त करके अयोध्या में कदम रखा था तब अयोध्या वालों ने बड़े धूमधाम से पूरी अयोध्या को दीपों से सजा कर भगवान राम के जीत की खुशी मनाई थी। उस समय से निरन्तर प्रत्येक वर्ष इस पर्व को बड़े हर्षोल्लास से पूरा भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व मनाता है। हमें भी इस समय संकल्प लेना चाहिए कि हमें सत्य एवं सदाचार के साथ अपने जीवन का निर्वहन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें भी गौतम बुद्ध की तरह "अप दीपो भव" की भावना जगानी होगी। उन्होंने विश्वविद्यालय के विषय में कहा कि सभी को स्वयं को विकसित करते हुए विश्वविद्यालय को आगे उन्नति की ओर लेकर जाना होगा। चरक, सुश्रुत जैसे विद्वानों के प्रयोगों को समाज के समक्ष लाना आवश्यक है।

उसके बाद विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिह ने सबको इस दीपोत्सव प्रकाश के पर्व को हर्षोल्लास से मनाने की शुभकामनाएं देते हुए सम्बोधित किया । दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा ही जीवन का सार है जीवन को बदलने के लिए संस्कृत सीखनी होगी। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र तथा छात्राओं ने भाग लिया और बड़े हर्षोल्लास से दीप प्रज्वलित कर हवन किया।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में ***महात्मा गाँधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती*** के उपलक्ष्य में एक विशिष्ट विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के आचार्यों आधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

"लौकिक काव्य के प्रथम उद्गाता आदिकवि वाल्मीकि"

वैदिक युग में महर्षि विश्वामित्र ने वैदिक छन्द गायत्री देकर समाज को उपकृत किया जो हजारों वर्षों की दीर्घ मात्रा के बाद भी जन-जन के कष्ट से उच्चरित 'गायत्री मन्त्र' भारतीय सांस्कृतिक यात्रा का अमिट स्तम्भ है। उसके पश्चात दूसरे कवि महर्षि वाल्मीकि, जिन्होंने वैदिक काव्य विधा से पृथक् लौकिक काव्य को एक नई विधा दी। यह कविता लौकिक काव्य की आदि विधा बन गयी और इसके उद्गाता महर्षि वाल्मीकि को आदि कवि होने का गौरव प्राप्त हुआ। उनके द्वारा लिखा गया रामायण ग्रन्थ लौकिक छन्द में लिखा आदिकाव्य कहलाता है।

महर्षि वाल्मीकि प्रतिभा से प्रभावित होकर ही स्वयं ब्रह्मा ने उन्हे आदि कवि की उपाधि प्रदान की और उनके कविता, ग्रन्थ को आदिकाव्य की संज्ञा प्रदान की। यही नहीं ब्रह्मा जी ने उन्हे वरदान देते हुए कहा कि जब तक सूर्य चन्द्र रहेंगे पृथ्वी पर पर्वत और नदियों का अस्तित्व रहेगा तब तक तुम्हारा यह काव्य रामायण अमर रहेगा।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरिताश्च महीतले।
तावद् रामायणी कथा लोकेऽस्मिन प्रचरिष्यति॥

ऐसे रामायणी काव्य के रचनाकार महर्षि वाल्मीकि कौन थे ?

महर्षि वाल्मीकि के विषय में अनेक कथाएं प्रचलित हैं परन्तु हम उन कथाओं में नही जाते हुए सीधे अपने मूल विषय की चर्चा करते है। यह सर्वविदित है कि रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना राम के जीवन काल में ही की थी। इससे यह सिद्ध होता है कि वे राम के समकालीन थे। उन्होंने रामायण की रचना तब की जब राम रावण का वध करके राम का अयोध्या में राज्याभिषेक हो चुका था।

रामायण के आरम्भिक चार सर्गों में उनके शिष्य भारद्वाज ने भूमिका के रूप जो वर्णन किया है उसमें वाल्मीकि के जीवन के रहस्यों का उद्घाटन भी हो जाता है। सन्दर्भो में वाल्मीकि के श्रेष्ठ धर्मात्मा मुनिवर होने के अनगिनत विशेषण मिल जाते हैं। रामायण के उत्तरकाण्ड में वे स्वयं को प्रचेता अर्थात वरुण का दसवाँ पुत्र कहते हैं।

'प्रचेतसोऽहं दशमः पुनो राघवनन्दन !

बाद में स्कन्दपुराण के वैभव खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाल्मीकि को लूटपाट करने वाला व्याध के रूप में प्रचलित किया गया। यही व्याध आगे चलकर वाल्मीकि बन गए परन्तु इसके प्रमाण नहीं मिलते। वाल्मीकि पहले व्याध थे बाद में महामुनि हो गए उन्होने राम कथा लिखी इसके अतिरिक्त वाल्मीकि से जुड़ी और भी महत्त्वपूर्ण घटना है।

एक घटना क्रोंच पक्षी के वध की ही है, जिसका प्रमाण वाल्मीकि रामायण की भूमिका में लिये गए ४ सर्गों में मिल जाता है। इसी घटना के बाद वाल्मीकि को आदिकवि की उपाधि मिली। एक दिन प्रातः गंगा के पास से वहने वाली तमसा नदी पर मुनि अपने शिष्यों के साथ स्नान करने गए। उन्होने देखा नदी के किनारे वृक्ष पर एक क्रौंच पक्षी का जोडा काम क्रीडा में मग्न था। बालकाण्ड में इसका वर्णन मिलता है।

मिथुनं चरन्तम् अनपायिनम् (बालकाण्ड) तभी वहाँ एक व्याध आया और उसने कामक्रीडा में रत कौञ्च जोडे में से नर क्रौंच को मार डाला। मादा क्रौंच (क्रौञ्ची) भयानक, विलाप करने लगी। यह दृश्य देखकर वाल्मीकि के करुण हृदय से अचानक श्लोक फूट पडा-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमाः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥
(बा. रा. वाल्काण्ड २/१५)

इस प्रकार वैदिक मन्त्रों को बोलने वाले ऋषि के मुख से यह नवीन छन्दमय श्लोक निकला। वे सोचने लगे यह उनके मुख से क्या निकाल पडा। शिष्य ने गुरु वाल्मीकि से कहा गुरु देव आपके शोकाकुल हृदय से अचानक निस्सृत यह चार चरणों से युक्त से प्रत्येक चरण में बराबर अक्षर हैं यह तो श्लोक है। इसके अलावा और कुछ नही हो सकता।

पादबद्धोक्षरसमः तन्त्रीलयसमन्वितः।
शोकार्तस्य प्रवृत्तो ये श्लोको भवतु नान्यथा॥
(बा. रा. वाल्काण्ड २/१८)

निश्चित रूप से करुणा से उदय हुए इस काव्य की भाषा और भाव वैदिक छन्द से अलग था। इसलिए वाल्मीकि को ब्रह्म जी का आशीर्वाद मिला कि तुमने नवीन काव्य की रचना की है इसलिए तुम आदिकवि हो। तुम इस शैली में रामकथा का लेखन करो। वह रामकथा तब तक, अमर रहेगी जब तक पृथ्वी पर पहाड और नदियां रहेगी।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणी कथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥
(बा. रा. वाल्काण्ड २/३६)

महर्षि वाल्मीकि के जीवन की इस घटना ने उन्हें आदिकवि बना दिया। उनके द्वारा रचित रामायण आदिकाव्य कहलाया। लौकिक छन्द में रचित पहला काव्य यदि कोई है तो वह रामायण है। रामायण विश्व का पहला अमर प्रबन्ध काव्य है जिसमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का व्यवहारिक विवेचन के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की स्थापना कर मानव मात्र को जीवन जीने का मार्ग दिखाया।

रामायण महाकाव्य में ५०० सर्ग २४००० श्लोकों का प्रबन्धन है। भारतीय जीवन मूल्यों की रूथापना में रामायण प्रबन्धकाव्य मील का पत्थर है। इसके रचयिता महाकवि वाल्मीकि भारतीय जीवन मूल्यों के संस्थापक महर्षि के रूप में सर्वमान्य है।

कृष्ण चन्द पाण्डेय
सहायक आचार्य (साहित्य)

सुभाषितम्

कर्मणा रहितं ज्ञानं पंगुना सदृशं भवेत्।
न तेन प्राप्यते किञ्चित् न च किञ्चित् प्रसाध्यते॥

कर्म रहित ज्ञान पंगु (निरर्थक) होता है। न तो उससे कोई वस्तु प्राप्त की जा सकती है और न उससे कोई कार्य ही सिद्ध किया जा सकता है।

दीपावली उत्सवः

कविकुलगुरुणा कालिदासेन अभिज्ञानशाकुन्तले विलिखितं यत् 'उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः'। मानवः नाम सामाजिक प्राणिनः। अतः ते उत्सवप्रियाः। मम प्रियः उत्सवः दीपावली दीपोत्सवः वा वर्तते। मह्यम् एतत् पर्व अतीव रोचते। एषः धार्मिकोत्सवः अस्ति। अस्मिन् उत्सवे बालाः युवकाः च नवनवानि वस्त्राणि धारयन्ति। स्फोटकानां स्फोरनं च भवति। सर्वे हर्षपूर्णाः भवन्ति। दीपावलीदिने लक्ष्मीपूजनं भवति। व्यापारिणः नवानि व्यापारपुस्तकानि आरभन्ते। जनाः स्वमित्रैः स्वजनैः च सम्मिलन्ति अभिवादयन्त च। सर्वे अस्मिन् पर्वणि प्रसन्नाः। दीपावली पावनताया, उल्लासस्य च प्रतीकमास्ति दीपकः अंधकारं नाशयति तथैव वयमपि अज्ञानस्य भेदभावस्य च भवानां नाश्यामः। अय अस्य पर्वतः संदेशः अस्ति। प्रतिवर्ष कार्तिक मासस्य कृष्णपक्षस्यमावस्यां महता उत्साहेन जनैः समायोज्यते। अमावस्याः पूर्वमेव जनाः स्वीयानां गृहाणां स्वच्छतां कुर्वन्ति, भवनानि सुद्यया लिम्पन्ति, द्वाराणि रजयन्ति, अलंकर्वन्ति।

दीपावलीदिवसे कान्दविकानामापणेष विविधरागरजितानि बहुविधमिष्टान्नानि आकाशं स्पृशन्ति इव दृश्यन्ते। सर्वत्र चित्राणां पंक्तयः आपणानां शोभां वर्धयन्ति। राती अमावस्याः अंधकारगृहाणामुपरि प्रज्वलिताः लघुदीपकपंक्तयः प्रकाशन्ते जनाः। नूतनवस्त्राणि धारयन्ति। रात्रौ लक्ष्मीपूजनं कुर्वन्ति। पूजान्ते स्वामित्रेभ्यो मिष्टानं वितरन्ति, एवं परस्पर – स्नेहभानवं स्थापयन्ति। बालकाः युवकाश्च आग्नेयकीडनकैः क्रीडन्ति। अस्मिन् दिने व्यवसायिनो नव्यासु पन्जिकासु आयव्ययं लियन्ति। इद मन्यते यत् रामचन्द्रः रावणं हत्वा स्वानुजेन लक्ष्मेण, भार्यया सीतया च सह कार्तिकमावस्यामेव अयोध्यामागतः आसीत्। तदा अयोध्यावासिनः तेषां स्वागतार्थं दीपमालाः प्रज्वाल्यन्। तदाप्रभृति अद्यावधि सर्वे भारतीयाः इदं उत्सवमतीवोल्लासेन मानयन्ति।

विनय
शास्त्री- तृतीय वर्ष

वसन्तगीत

निनादय नवीनामये वाणि ! वीणाम्
मृदुं गाय गीति ललित-नीति-लीनाम्।
मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम्॥१॥
निनादय...॥
वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम्॥२॥
निनादय...॥
ललित-पल्लवे पादपे पुष्पपुजे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम्॥३॥
निनादय...॥
लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम्॥४॥
निनादय...॥

दीपक
आचार्य द्वितीय वर्ष

आदर्श वाक्यानि

काक चेष्टा, बको ध्यानं,स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी,विद्यार्थी पंचलक्षणं॥

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

गच्छन् पिपीलको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते।
यदन्नं भक्षयते नित्यं जायते तादृशी प्रजा॥

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥

विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्येत् कदाचन्।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥

शीतल (आचार्य)
संस्कृत पत्रकारिता

एहि एहि वीर रे

एहि एहि वीर रे। वीरतां विधेहि रे। भारतस्य रक्षणाय। जीवनं प्रदेहि रे॥
एहि एहि वीर रे। वीरतां विधेहि रे। भारतस्य रक्षणाय। जीवनं प्रदेहि रे॥

एहि एहि वीर रे। वीरतां विधेहि रे। भारतस्य रक्षणाय। जीवनं प्रदेहि रे॥
त्वं हि मार्गदर्शकः। त्वं हि देशरक्षकः। त्वं हि शत्रुनाशकः। कालनागतक्षकः॥

त्वं हि मार्गदर्शकः। त्वं हि देशरक्षकः। त्वं हि शत्रुनाशकः। कालनागतक्षकः॥
एहि एहि वीर रे। वीरतां विधेहि रे। भारतस्य रक्षणाय। जीवनं प्रदेहि रे॥

साहसी सदा भवेः। वीरतां सदा भजे। भरतीयसंस्कृतिं। मानसे सदा धरेः॥
साहसी सदा भवेः। वीरतां सदा भजे। भरतीयसंस्कृतिं। मानसे सदा धरेः॥

एहि एहि वीर रे। वीरतां विधेहि रे। भारतस्य रक्षणाय। जीवनं प्रदेहि रे॥
पदं पदं मिलच्चलेत्। सोत्साहं मनो भवेत्। भारतस्य गौरवाय। सर्वदा जयो भवेत्॥

पदं पदं मिलच्चलेत्। सोत्साहं मनो भवेत्। भारतस्य गौरवाय। सर्वदा जयो भवेत्॥
एहि एहि वीर रे। वीरतां विधेहि रे। भारतस्य रक्षणाय। जीवनं प्रदेहि रे॥

बिन्दू
आचार्य- द्वितीय वर्ष

स्त्री शिक्षयाः

वैदिकयुगे स्त्रीशिक्षयाः महत्वं सर्वे जानन्ति स्म। वेदेषु यथा पुरुषाः मंत्रदृष्टारः आसन् तथैव काश्चन नार्यः अपि ब्रह्मवादिन्यः गैत्रेयी गार्गी समाः भारते अभवन्। मण्डन मिश्रस्य-पत्नी स्वयं परमविदुषी आसीत्। कालिदासस्य पत्नी विद्योत्मा अति विदुषी आसीत्।

अतएव वैदिक परंपरां अनुरूध्य स्त्रीशिक्षा पुरुषशिक्षा इव अनिवार्या आसीत्। मनुस्मृतौ वर्णितं यद् यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः। नारी पूजायाः किं तात्पर्यमस्ति ? नारी शिक्षा एव नारी पूजा। शिक्षिता नारी शिक्षिता माता भगिनी, शिक्षिता, च शिक्षिता पत्नी भूत्वा सपरिवारस्य महते कल्याणाय कल्पते। शिक्षितया नार्या समाजः स्वस्थः पुष्टः विकासोन्मुखश्च जायते। समाज जीवनस्य सर्वेषु क्षेत्रेषु शिक्षितनारीणा महत्त्वं स्थानम् च अधुना सर्वत्र स्वीक्रियते।

नीलम
आचार्य- द्वितीय वर्ष

वेदस्य अपौरुषेयत्वम्

संस्कृतवाङ्मयस्य शब्दरचनादृष्ट्यां वेदस्यार्थः 'ज्ञानम्' इति भवति। परन्तु एतस्य प्रयोगः साधारणतया एतस्मिन् अर्थे न क्रियते। अस्माकं महर्षिभिः स्वतपस्याद्वारा यद् 'अभयज्योतिः' इत्यस्य परम्परागत-शब्दरूपस्य साक्षात्कारः कृतः, तत् शब्दराशिः हि वेदो नाम। अयं वेदः अनादिः एवं साक्षात् परमात्मस्वरूपो वर्तते - 'वेदो नारायणः साक्षात्', 'वेदस्य चेश्वरात्मत्वात्' चेति श्रीमद्भागवते। महर्षीणां साक्षाद् एवं प्रत्यक्षतया दर्शनकारणतः, अत्र असत्यस्य अविश्वासस्य च कृते स्थानमेव नास्ति। अयं नित्यः तथा अभयज्योतिस्त्वेन अभिव्यक्तकारणतः अपौरुषेयः आख्यायते।

'वेदः अनादिः, अपौरुषेयः तथा नित्योऽस्ति, एवं तस्य प्रामाणिकता स्वतःसिद्धा वर्तते' इत्येवं प्रकारकं मतम् आस्तिकसिद्धान्तवताम्, तथा पौराणिक-साङ्ख्य-योग-मिमांसा-वेदान्तविदां दार्शनिकानां वर्तते। न्याय-वैशेषिकविदो दार्शनिका वेदम् अपौरुषेयं न मन्यन्ते चेदपि पुरुषोत्तमेन निर्मितोऽयम् इति तेषां मतम्।

यो वेदं प्रमाणरूपं न मन्यते, स न आस्तिकः, अपितु नास्तिकः कथ्यते। अतः सर्वे आस्तिकमतवन्तो वेदं प्रमाणरूपेण स्वीकर्तुम् एकमताः। परन्तु नास्तिकानां तथा न। नास्तिकास्तु वेदा नानाजनैः विरचिताः सन्ति इति कथयेयुः। चार्वाकमतवादिनस्तु वेदो निष्क्रियजनानां जीविकायाः साधनभूतो वर्तते इत्यपि वर्तते।

अतः आस्तिकानां दृष्ट्यां वेदः सर्वदा अपौरुषेयो हि। वस्तुत एतदेव सत्यमपीति, शुभम्।

पंकज शास्त्री
शास्त्री द्वितीय

गृहाणां वर्तमान स्थितिः

वर्तमानसमये परिवाराणां स्थितिः यथा जाता सा अवश्यमेव चिन्तनीया। गृहेषु सर्वे श्रावणार्थं सिद्धाः पर कोऽपि श्रवणार्थं सिद्धः नास्ति। सम्बन्धं दृढ़ीकर्तुम् अस्माभि श्रावणस्य न अपितु श्रवणस्य रूचिः उत्पादनीया। जानाति यत् भवान् सम्यक् अस्ति तथापि पारिवारिकशान्त्यर्थं विना कारणेन श्रवणेऽपि दोषः नास्ति प्रत्युत्तमः अस्य यत् आत्मानं प्रमाणयितुम आपरिवारं उद्विग्नं कर्तुं नोचितम्। स्वजनान् पराजित कृत्वा स्वं जयं न प्राप्तुं शक्नोति अपितु स्वजनैः पराजित्वा एव भवन्तः जयं प्राप्तुं शक्नुवन्ति। अधुना प्रत्येकं व्यक्ति स्वाधिकारस्य वार्तां करोति। परन्तु दुःखं भवति यत् कर्तव्यस्य वार्ता कोऽपि न करोति। भवन्तः स्व कर्तव्यस्य पालनं कुर्वन्तु प्रतिफलस्य इच्छां मा कुर्वन्तु। गीतायामपि भगवता श्री कृष्णेन उक्तं यत् – कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥2-47॥ जीवनस्य सुन्दरता एतावत् नास्ति यत् भवान् कियत् प्रसन्नः अपितु भवत्कारणात् कति प्रसन्नाः सन्ति। साधारणश्रेष्ठयोः मध्ये केवलम् एतावदेव भेदत्वं वर्तते यत् साधारणः तत् चिनोति यत् सरलम् एवं श्रेष्ठः तत् चिनोति यत् कठिनम्।

आचार्य दीपककौशिकः
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

प्रश्नमञ्जरी

ज्यौतिषशास्त्रीय वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

१. वराहमिहिरानुसारेण ज्यौतिषशास्त्रस्य कति स्कन्धाः ?
(क) दश (ख) त्रयः (ग) षट् (घ) चत्वारः
२. चन्द्रग्रहणं कदा भवति ?
(क) अमायां (ख) पूर्णिमायां (ग) दर्शान्ते (घ) पूर्णिमान्ते शराभावे शरालपे वा
३. भूभ्रमणसिद्धान्तः केन प्रतिपादितम् ?
(क) आर्यभट्टेन (ख) भास्कराचार्येण (ग)जीवनाथेन (घ)वराहमिहिरेण
४. बीजगणितं केन लिखितम् ?
(क) भास्कराचार्येण (ख) जीवनाथेन (ग) कालिदासेन (घ) वराहमिहिरेण
५. आज्ञा कस्य भावस्य संज्ञा ?
(क) प्रथमभावस्य (ख) चतुर्थभावस्य (ग) सप्तमभावस्य (घ) दशमभावस्य
६. मेषराशौ कस्य ग्रहस्य परमोच्चांशः भवति?
(क) सूर्यस्य (ख)जीवस्य (ग) सितस्य (घ) शनेः
७. एकस्मिन् नक्षत्रे कति अंशाः ?
(क) १२ अंशाः (ख) १३ अंशाः (ग) २० कलाः (घ) १४ अंशाः
८. पलभा ज्ञानाय सायनसूर्यस्य स्थितिः कस्मिन् राशौ भवेत् ?
(क) मेषादौ (ख) मिथुनादौ (ग) कर्कादौ (घ) मकरादौ
९. विंशोत्तरीदशायां कयोः ग्रहयोः दशावर्षाणि समौ भवतः ?
(क) सूर्यचन्द्रयोः (ख) बुधजीवयोः (ग) केतुभौमयोः (घ) शनिसितयोः
१०. "अद्रिः" इति पदेन का संख्या गृह्यते ?
(क) सप्त (ख) षट् (ग) नव (घ) दश

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(द्वितियङ्कस्य उत्तराणि)

(1) त्रयः (2) क्त (3) पाणिनी (4) 22 (5) पञ्च (6) षट् (7) टाप् (8) त्रयः (9) संस्कृतम् (10) ल्युट्

व्यवहारवाक्यानि

१. किमपि न भवति।	कुछ नहीं होता।
२. स्वास्थ्यं सम्यक् अस्ति।	स्वास्थ्य ठीक है।
३. पत्रं लिखति।	पत्र लिखता है।
४. पृष्ट्वा वदामि।	पूछकर बताता हूं।
५. यदि समयः अस्ति तर्हि आगच्छतु।	यदि समय है तो आ जाओ।
६. यदा आगच्छति तदा सूचयामि।	जब आएंगे तब बताता हूँ।
७. चिन्तां न करोतु।	चिन्ता मत करो।
८. अहं किं करोमि ?	मैं क्या करूं ?
९. भवान् तु जानाति स्म।	आप तो जानते थे।
१०. अस्तु मिलामः।	अच्छा मिलते हैं।

विज्ञानस्य चमत्काराः

विज्ञानस्य प्रतिदिनं नूतनाः चमत्काराः पठ्यन्ते श्रूयन्ते च। अतः तेषां वर्णनं सर्वथा अशक्यम्। यत् किञ्चिद् वर्णनं कर्तुं शक्यते तदेव लिख्यते अत्र।

कृषिक्षेत्रेषु सौविध्यम्-

अद्य कृषिक्षेत्रे सर्वकार्यं विद्युतचालितं यन्त्रैः भवति। बीजानां वपनम्, कण-बूसयोः पृथककरणम्-क्षेत्रसिच्चनम्, भूकर्षणम् अपि सर्वं यन्त्रैः साह्यते।

गृहक्षेत्रेषु सौविध्यम्-

गृहे पाकशालायां स्टोव-पाचकगैससाहाय्येन अनायासामेव सर्वविधः पाकः सिद्धतां याति। वस्त्रक्षालनयन्त्रेण वस्त्राणि स्वतः सत्वरं क्षालितानि सन्ति। गृहमार्जनयन्त्राणि, कूलर-हीटरफ्रीजादीनि च कस्य न सूखावधानि?

यातायात-संचारसाधनानि-

जलस्थलवायुमार्गयानानि पश्यतामेव स्थानात् प्लवन्ते। उपग्रहसहाय्येन संचारसाधनानि अतीव सुलभानि सन्ति। आकाशवाणी-दूरदर्शनेन मनोरञ्जनसाधनानि सरलतया हस्तगतानि तिष्ठन्ति। चिकित्साक्षेत्रे चमत्काराः-

चिकित्साक्षेत्रे पुरुषस्य नेत्र-हृदय-यकृतादिसर्वाङ्गानाम् अन्यपुरुषस्य शरीरेषु आरोपणं कर्तुं शक्यते।

उपसंहारः-

विज्ञानस्य जनसहायकं रूपं सर्वोपकारकं रुपमस्ति। वयं विज्ञानस्य चमत्कारैः सदा उपकृताः भवामः।

अनिलः शास्त्री
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

धन्य धन्य हे वाल्मीकि !

सबसे पहले शब्दों से जिन्होंने सूरत दिखाई भगवान की
धन्य धन्य हे वाल्मीकि ! जो ज्योत जलाई ज्ञान की

भील वंश में हुआ पालन पोषण करते रहे शिकार
आते जाते पथिको की करते रहे लूटमार
एक दिन नारद मुनि से लगी ज्ञानमय फटकार
सब दुर्वृत्ति छोड़ मन में आने लगे सुविचार
छोड़ सब मोह माया घर की, मन में ठानी ध्यान की
धन्य धन्य हे वाल्मीकि जो ज्योत जलाई ज्ञान की

बैठ तरु के नीचे ध्यान लगाया मन में
मरा मरा की गूंज उठने लगी गगन में
रत्नाकर को ज्ञान नहीं की दीमक लग गई तन में
पूरी काया वल्मिक हो गई पर वो रहे मगन में
वल्मिक से फिर ख्याति हो गई वाल्मीकि के नाम की
धन्य धन्य हे वाल्मीकि जो ज्योत जलाई ज्ञान की

एक दिन महर्षि प्रातः करने गए स्नान
क्रौंच पक्षी युगल पर गया उनका जरा ध्यान
प्रेम में डूबे युगल के, लगा एक को बाण
दुख परिणित हो हुआ श्लोक निर्माण
बोले चिरकाल भी पताका ना हो तुम्हारे मान सम्मान की
धन्य धन्य हे वाल्मीकि जो ज्योत जलाई ज्ञान की

सुन श्लोक तीन लोक देवगण हर्षाये
ब्रह्मा जी की आज्ञा पाकर २४००० श्लोक बनाएं
लौकिक संस्कृत काव्य में आदि कवि कहलाए
प्रकृति चित्रण सूक्तियों से सात कांड महकाए
आज रामायण जड़ है धर्म के उत्थान की
धन्य धन्य हे वाल्मीकि जो ज्योत जलाई ज्ञान की

भ्रातृ प्रेम में भरत देखा भक्ति में हनुमान
क्रोध में लक्ष्मण जी देखा मर्यादा में श्रीराम
असुरों में छल बल देखा रावण का अभिमान
आज तक ना हमने देखा लव-कुश सा बलवान
सतीत्व पतिव्रता देखी जनक नंदिनी जानकी
धन्य धन्य हे वाल्मीकि जो ज्योत जलाई ज्ञान की

प्यारे लाल
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

वाल्मीकि सुविचार

मनुष्य का आचार ही बताता है
कि वह कुलिन है या अकुलिन
वीर है या कायर अथवा
पवित्र है या अपवित्र

दुख और विपदा जीवन के
दो ऐसे मेहमान है
जो बिना निमंत्रण के आते है।

संसार में ऐसे लोग
थोडे ही होते है
जो कठोर किंतु हित की
बात कहने वाले होते है।

जो लोग गलत रास्ते
पर चलते हैं,
उन्हे कभी भी सच्चा
ज्ञान प्राप्त नही होता।

यदि आपका संकल्प दृढ है तो
कोई भी काम आसान बना सकते है।

डॉ. महावीर
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

तस्मै वाल्मीकये नमः

आदिकाव्यप्रणेता यो लौकिके संस्कृतेऽद्भुतम्।
कृतं रामायणं येन तस्मै वाल्मीकये नमः ॥१॥

दिव्यदिव्यैर्महत्पद्यैस्सप्तकाण्डसमन्विता।
जनिता रामगाथा यैस्तस्मै वाल्मीकये नमः ॥२॥

दृष्ट्वा क्रौञ्चमहत्कष्टं जातः क्रोधसमन्वितः।
शापितो व्याधको येन तस्मै वाल्मीकये नमः ॥३॥

सीतासंरक्षकश्श्रेष्ठो रामपुत्रप्रपालकः।
रामनामसुधासिक्तस्तस्मै वाल्मीकये नमः ॥४॥

काण्डे च सुन्दरे येन वर्णितं सुन्दरं प्रियम्।
हनुमच्चरितं दिव्यं तस्मै वाल्मीकये नमः ॥५॥

प्रचेतस्सस्सुपुत्रो यो भृगुवंशावतंशकः।
नारदोऽस्ति गुरुर्यस्य तस्मै वाल्मीकये नमः ॥६॥

संसारे सारिता येन सनातनपरम्परा।
भारतात्मा मुनिश्श्रेष्ठस्तस्मै वाल्मीकये नमः ॥७॥

तुलसीदासरूपेण ह्यवतीर्य च पुनर्भूवि।
लिखितं मानसं येन तस्मै वाल्मीकये नमः॥८॥

रचितं शशिकान्तेन मुनिश्रेष्ठसुधाष्टकम्।
रघुवरकृपादृष्टिर्भूयादस्मिन्प्रकामये ॥९॥

डॉ.शशिकान्ततिवारी
सहायक आचार्य
दर्शनविभाग

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संस्कृत-भाषा अस्माकं देशस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। प्राचीनकाले सर्वे एव भारतीयाः संस्कृतभाषाया एव व्यवहारं कुर्वन्ति स्म। कालान्तरे विविधाः प्रान्तीयाः भाषाः प्रचलिताः अभवन्, किन्तु संस्कृतस्य महत्त्वम् अद्यापि अक्षण्णं वर्तते। सर्वे प्राचीनग्रन्थाः चत्वारो वेदाश्च संस्कृतभाषायामेव सन्ति। संस्कृतभाषा भारतराष्ट्रस्य एकतायाः आधारः अस्ति। संस्कृतभाषायाः यत्स्वरूपम् अद्य प्राप्यते, तदेव अद्यतः सहस्रवर्षपूर्वम् अपि आसीत्। संस्कृतभाषायाः स्वरूपं पूर्णरूपेण वैज्ञानिक अस्ति। अस्य व्याकरणं पूर्णतः तर्कसम्मतं सुनिश्चितं च अस्ति।

आचार्य-दण्डिना सम्यगेवोक्तम्

"भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।" अधुनाऽपि सङ्गणकस्य कृते संस्कृतभाषा अति उपयुक्ता अस्ति। संस्कृतभाषैव भारतस्य प्राणभूताभाषा अस्ति। राष्ट्रस्य ऐक्यं च साधयति। भारतीयगौरवस्य रक्षणाय एतस्याः प्रसारः सर्वैरेव कर्त्तव्यः। अतएव उच्चते-'संस्कृतिः संस्कृताश्रिता।'

सुमन
आचार्य- द्वितीय वर्ष

वेद एवं यज्ञ विज्ञान

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृताः

यह सुविदित है कि विश्व ज्ञान का प्रथम स्रोत वेद ही हैं। विश्व के सभी पौर्वापर्य विद्वानों ने एकमत से यह स्वीकार किया है कि वेद विश्वसाहित्य का आदिम ग्रंथ है। सभी प्रकार के ज्ञान का मूल स्रोत एवं उत्स वेद ही हैं। इसलिए जब भी मानव जीवन एवं उनके मूल्यों पर संकट की स्थिति उत्पन्न होती है तब हमें अपनी परम्पराओं, मान्यताओं, आस्थाओं में विश्वास प्रकट होना आरम्भ हो जाता है। संसार के सभी प्रकार के दुखों की निवृत्ति एवं सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति के साधनाधार वेद एवं वेदानुगामी शास्त्र ही हैं ,क्योंकि वेदों का प्रतिपाद्य विषय यज्ञ है और यज्ञ का मुख्य उद्देश्य है इस सृष्टि में संतुलन स्थापित करना है। इसलिए प्रकृति में संतुलन स्थापित करने के लिए ही ऋषियों ने यज्ञ- विज्ञान, भैषज्य- विज्ञान, (औषधिशास्त्र) योगशास्त्र, समाजशास्त्र आदि अनेक विषयों का निदर्शन कर वेदों में उल्लेखित किए। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी वेदोक्त वचनों को प्रमाणित करते हुए कहा है -

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञकर्मसमुद्भवः॥

इसप्रकार जब भी मानवता संकट में होती है तब हमारी दृष्टि वेद एवं आयुर्वेद की ओर जाति है। इसमें प्रत्यक्ष की अपेक्षा परोक्ष लौकिक की अपेक्षा अलौकिक उपायों को महत्त्व दिया गया है तद्यथा-

"इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः"

अतः अलौकिक वेद के उपाय भी अलौकिक हैं। रोगोपशमन में जब समस्त औषधि एवं उपचार की सीमा समाप्त हो जाती है तब हमें वेद यज्ञ- विज्ञान ही अलौकिक मार्ग का अनुशरण करने की प्रेरणा प्रदान करता है। यज्ञ की वैज्ञानिकता को निम्न श्लोक में उद्धृत किया गया है-

अग्नौ प्रस्ताहुति सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टि :वृष्टेरन्नं ततः प्रजा॥

इन सन्दर्भों के मध्य सूक्ष्मविचार से यही सन्देश निकलता है कि प्रकृति के संतुलन से ही मानव जीवन सम्पोषित एवं संवर्धित हो सकता है। अतएव वैदिक ऋषियों ने सतत रूप से मानव को प्रकृति से जोड़ने के लिए एतद् सम्बधी तत्त्वों को देवता मानकर उनमें आस्था एवं श्रद्धा के भाव उत्पन्न किए। जीवन आचार - व्यवहार से संचालित हो इसके लिए नित्य, नैमित्तिक, प्राश्चित और उपासना का विधान भी किया गया। जिससे हमारी मानसिक शारीरिक एवं आध्यात्मिक शुचिता बनी रहें। इस सन्दर्भ में ईशावाश्योपनिषद् का मन्त्रांश द्रष्टव्य है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः

एवं अनेक सन्दर्भ वेदों में प्राप्त होते हैं जिनका हमारे व्यवहारिक जीवन से साक्षात सम्बन्ध होता है। इस प्रकार वेद वह अक्षुण्ण ज्ञान राशि है जिसमें भूत, भव्य एवं भविष्य से संबंधित कोई भी ऐसा विषय नहीं है जो वेद से अगम्य हो तद्यथा-

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।
भूमि भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति॥

आज के सन्दर्भ में वेद के कुछ ऐसे महत्वपूर्ण पक्षों के आधार पर भारतीय वैदिक विद्वानों के मत एवं इनकी उपयोगिता दिनानुदिन महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध हो रही है। इस दृष्टि से वेद के अध्येताओं का महत्त्व किसी वैज्ञानिक अनुसंधान एवं चिकित्सा क्षेत्र में देखा जा सकता हैं। इसलिए आज वेदाध्ययन की आवश्यकता सर्वत्र देखी जी सकती है। रोजगार की दृष्टि से शत् प्रतिशत उपयोगी है। वेदों में स्वरोजगार एवं अन्य व्यवसायिक क्षेत्र प्राप्त होते हैं, जिससे रोजगार सम्बन्धि दृष्टि मिलती है।

डॉ. मदन मोहन तिवारी
सहायक आचार्य (वेद)

रामायण ज्ञानामृत

अनिर्वेदो हि सततं सर्वार्थेषु प्रवर्तकः।
करोति सफलं जन्तोः कर्म यच्च करोति सः॥

वा.रा.,सुन्दरकाण्ड ०९/११

उत्साह ही प्राणियों को हमेशा सभी प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त करता है। उत्साह ही उन्हें जो कुछ वे करते हैं,उस कार्य में सफलता प्रदान करता है।

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्॥

वा. रा.,किष्किन्धा काण्ड ०१/१२१

उत्साह ही बलवान होता है। उत्साह से बढ़कर दूसरा कोई बल नहीं है। उत्साही पुरुष के लिए संसार की कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

निरुत्साहस्य दीनस्य शोकपर्याकुलात्मनः।
सर्वार्था व्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति॥

वा.रा.,युद्धकाण्ड ०२/०६

जो पुरुष निरुत्साही व दीन है, शोक से व्यथित रहता है, उसके सारे काम बिगड़ जाते हैं और वह विपत्ति में पड़ जाता है।

अनिर्वेदः श्रियो मूलमनिर्वेदः परं सुखम्।

वा. रा. सुन्दरकाण्ड १२/१०

उत्साह ही श्री का मूल कारण है। उत्साह ही परम सुख है।

यदाचरति कल्याणि शुभं वा यदि वा शुभम्।
तदेव लभते भद्रे कर्ता कर्मजमात्मनः॥

वा.रा.,अयोध्याकाण्ड ६३/०६

मनुष्य शुभ या अशुभ जो भी कर्म करता है, वह अपने उन शुभ-अशुभ कर्मों का भोक्ता होता है।

क्रोधः प्राणहरः शत्रुः क्रोधो मित्रमुखो रिपुः।
क्रोधो ह्यसिर्महातीक्ष्णः सर्व क्रोधोऽपकर्षति॥

वा.रा.,उत्तरकाण्ड ०२/२१

क्रोध प्राण लेने वाला शत्रु है, क्रोध मित्र सा दिखने वाला शत्रु है, क्रोध अत्यन्त तीखी तलवार है तथा क्रोध सारे गुणों का नाश करता है।

वाच्यावाच्यं प्रकुपितो न विजानाति कर्हिचित्।
नाकार्यमस्ति क्रुद्धस्य नावाच्यं विद्यते क्वचित्॥

वा.रा.,सुन्दरकाण्ड ५५/०५

क्रोधी मनुष्य कैसा भी अपशब्द कभी भी अपने मुख से निकाल सकता है और बुरे से बुरा कर्म कभी भी कर सकता है।

धन्याः खलु महात्मानो ये बुद्धया कोपमुत्थितम्।
निरुंधति महात्मानो दीप्तमग्निमिवाम्भसा॥

वा.रा.,सुन्दरकाण्ड ५५/०३

वे महान् पुरुष धन्य हैं जो अपने उठे हुए क्रोध को अपनी बुद्धि के द्वारा उसी प्रकार रोक देते हैं, जैसे दीप्त अग्नि को जल से रोक दिया जाता है।

क्षमा दानं क्षमा सत्यं क्षमा यज्ञाश्च पुत्रिकाः।
क्षमा यशः क्षमा धर्मः क्षमायां विष्ठितं जगत्॥

वा.रा.,बालकाण्ड ३३/८-९

क्षमा दान है, क्षमा सत्य है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा यश है और क्षमा धर्म है। यहाँ तक कि क्षमा पर ही यह सम्पूर्ण जगत टिका हुआ है।

स्वर्गो धनं वा धान्यं वा विद्या पुत्राः सुखानि च।
गुरुवृत्त्यनुरोधेन न किंचिदपि दुर्लभम्॥

वा.रा.अयोध्याकाण्ड ३०/३६

गुरुजनों की सेवा करने.से स्वर्ग,धन-धान्य,विद्या,पुत्र,सुख आदि कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्।
चारित्रमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वा शुचिम्॥

वा.रा.,अयोध्याकाण्ड १०९/०४

चरित्र ही बताता है कि कौन पुरुष कुलीन है, कुलहीन है, वीर है, अमानी है, पवित्र है या अपवित्र है।

शक्यमापतितः सोढुं प्रहारो रिपुहस्ततः।
सोढुमापतितः शोकः सुसूक्ष्मोऽपि न शक्यते॥

वा.रा.,अयोध्याकाण्ड ६२/१६

शत्रु के हाथ का प्रहार सहन करना सम्भव है, परन्तु अचानक आ पड़ा अति सूक्ष्म दुःख भी सहन करना असम्भव है।

शोको नाशयते धैर्यं शोको नाशयते श्रुतम्।
शोको नाशयते सर्वं नास्ति शोकसमो रिपुः॥

वा.रा.,अयोध्याकाण्ड ६२/१५

शोक धैर्य को नष्ट कर देता है,शोक शास्त्र के ज्ञान को नष्ट कर देता है, शोक सफ कुछ नष्ट कर देता है अतः शोक के समान दूसरा कोई दुश्मन नहीं है।

डॉ. नवीन शर्मा
सहायक आचार्य (ज्योतिष)